FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.
बार सेवा मंदिर
दिल्ली

* 23-47 *

क्रम मंज़ूर
कान नं. 0
खण्ड

उपरोक्त इसमें किला है  वह मानव प्रति के तथा देशनेता-प्रगति की है न है।
जैन सरावी से आंत्रित ऐसी संस्कृति अथवा हिन्दू आरंभिक 2500 साल पुराना है, जैन धर्म एवं प्राचीनता वातावरण को सच्ची जानकारी है, 500 प्रतियों अपनी अपरिसंहित अमूर्त धार्मिक सहभागी है। आपको इस प्रशस्त मानना के हिसे

प्रथम अवस्था जिन वन्यजीवों के जैन धर्म के प्रति अन्याय अथवा विद्वानों की शुभ संस्कृतियाँ मिले, अथवा उनके

सहज दृष्टि से मुझको मेजनेकी कुपा करे ताकि अधिक संस्कार के  इससे  भी अधिक सुन्दर कर सके। बस!

ता. 1-3-48 } भाष सरका—"स्वतंत्र" धरत।
जैनधर्म पर व्यक्त मत।

मैं विश्वास करता हूँ कि जैनधर्म सुविधा का नाम है। इस समय यदि किसी ज्ञानी के खिलाफ भविष्य पूछने देता है तो वह ज्ञानी है। ज्ञानी तक्षके यदि किसी से अवधिक कोई विवेचन किया है तो वे जैनधर्म स्वामी थे।

—स्वामी गांधी।

जैनों के अर्थ है संस्कृत और ज्ञानी। जहां ज्ञानी है वहीं ज्ञानी नहीं। दुनियाँ के यह पाठ पढ़नें। ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी। नहीं तो क्या ज्ञानी ज्ञानी स्वस्तति के देखके देखके जैनों-जैनों ही लेना पड़ेगी।

—सरदार वल्लभभाई पटेल, गुरुमम्बी-भारत-सरकार।

हिंदू संस्कृति भारतीय संस्कृति का एक भाग है, और जैन तथा बौद्ध यथाप्रयोग पूर्णतया भारतीय हैं। हिंदू नहीं हैं।

—स्वामी श्रीरामचंद्र नेहरू (इंदिरा गांधी इंडिया)।

जैनों से जानेदार के नवदेवों पर नकार करनें। वास्तविकता का प्रतीत बाह्यों है। इस महापुरुषों के बताये हुये पद्धता अनुसार कर।
इस शास्त्र का भाव का लाभ है। आजका संरक्षित और बाहरी संस्मरण तो इस सत्ता मुझे उपदेशों की चर्चा का सुल्तान राष्ट्र का छोड़ा है।

—हाँ राजेन्द्रप्रमाण अभीमान

भू महावीरके जैनं जैनको पुनः प्रकाशयाम साहा। वे २४ वें अवतार थे, इनके पहिले ऋषभ, ने, पार्थ आदि नामके २३ अवतार और हुई हैं, जो कि जैनको प्रकाशयाम साहा थे, इस प्रकाश
इन २३ अवतारोंके पहिले भी जैनवरी था, इसलिए जैनवरीकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

—स्वल्प लोकमान्य तिवारी।

महावीरके सन्देश हुतमें अ तुभाय वेदा कार्ता है।

—हिंि पवक्षीकर सर अवर देवी गदा, आमाम।

मनुकाको उपलेख पर रखत हुई विधियाँ—भावाना अभिप्रा चै। देवके वादार द्वारा प्राप्त करना यह "श्री महावीर" का अदेश रखना है।

—श्री श्री श्री मातृदेवि प्रसंस्कर् ते वेदगे पूजेबी।

अभिप्रा और सरर—धनी समस्त जैनवरीके सूचन विसदान्त हैं।

—से बच बच बच बच बच चतुरा दारो विनयसिङ गुप्तभादी जरुपुर।

आवजके बिहार हुवे वातावरणमें जबकि जाति भावनावें और भाव रूप धारण कर देवको हिमपती एक्षेत्र ही आ ही है तब भो महावीरके अभिप्रा सवे वर्षों पहलाका पाठ पड़ता है।

—श्री पं. देवींवरी तिबारी (श्रीमानी) जयसुम्नन।
It is impossible to find a beginning for Jainism. Jainism thus appears as the earliest faith of India.

In *The short studies in Science of Comparative Religious, By G. J R Furlong.*

The names Bishhha, named etc are well-known in Vedie Literature. The members of Jains order are known as Nirgranthhs.

In *Historical Gleanings by Dr. Bimalcharan.*


—Shri Badarshahiji M. A.

—Shri Tukaram Shastri Shama Bhu.

हेम प्रेक्षक के कारण यथार्थवाचकता विपक्षिकों ने हमें हास्यकरता न होकर सर्वत्र विपक्षी होता रहा है। बहुत यथार्थता का वर्णन बेदमें पाया जाता है।

—स्वामी विष्णुग्रीकाय म.ए.

जैनवाद स्वयं स्वतन्त्र है, गैर विश्वास है कि वह किसी का अनुभव नहीं है।

—डॉ० हर्मन जेकोवी, ए.ए.पी.ए. डी.

वैज्ञानिकों के दो तीर्थ के नेत्रिनाथ एंडरसन संस्कृति महापुर्ण माने गये हैं।

—डॉ० फुर्तो।

अत्यंत तर्क प्रमाणित होता है कि जैनवाद सौदृज्ज्वल धर्मकी शाखा नहीं है।

—बाबु चंद्रकिशोर ए.ए.बी.एल.

जैन आधुनिक एक नहीं है ज्ञानों से भिन्न नहीं आया है।

—मित्र शिवराजसिंह "मिनोर विंदर"

यह भी निर्विभाज सिद्ध हो जाता है कि बौद्धवाद के संधाय सीमांत गौतम बुद्ध के पहले वैज्ञानिकों के २ २ तीर्थकर और होते हैं।

—हर्षीरथ गजेंद्रसिंह भाषाविद्या प. ५४।

यह बात निश्चित है कि जैनवाद बौद्धवाद से पुराना है।

—मिस्टर टी.डी. डन्यूर एंडरसन वैदिक।

स्वाध्याय जैनवाद का अभी किया है। उसके अन्तर्गत बादी पाल-बादीयों के मायामय गोले प्रवेश नहीं कर सकते। युगों तो यह बातें
The duration of the world is equally infinite and unbounded, no end. It has no beginning and no end it is no eternity (3) Subs iverse is everywhere and always in uninterrupted movement and transformation now here is perfect repose and rigidity yet the infinite quantity of matter of externally Changing force remains constant.

In. The Riddle of the universe.

by, m/r HECKAII.

नेमनाथ श्री कुष्ठके भाई थे। —अंतुज चाणे।

एकाडी निग्र: शात, पाणिग्र: लिद्यास:।
कुठा होयोऽ: मायापी, यासे निम्नकम्याम ॥

—समुदाय।

नाह गाँव ९ में वाला, मथुरा न च से कृपा।
शास्त्रभाषानुसारकाल, स्वतंत्रमं सिद्धम ॥

—योगवर्धासाह, बीता।

ऐतिहासिक सामग्रीसे सिद्ध हुआ कि आजसे ५ इंतार वर्ष पहिले भी जैनसम्बन्धी लिखा थी।

—३० प्राणानाथ ऐतिहासिक।

महाभारत प्रमाण बारे परम सहृदय भगवान सुभद्रेवजी महाशीक।
बाले सब कर्मसे बिन्दु महामुनिन्दो भक्तिसाधन वेगाय लक्षणयुक्त परम-
हीनके सर्वका शिश्व करते थे। — भागवत् स्त्रवि ५ अ. ५।

शुरु देवजी करते हैं कि भगवाने अनेक अबतार घण्य किये,
फल पत्थर संगमके मनुष्य कर्म करते हैं तब किया। किन्तु अबु-
देवजीने जगतां गोष्ट में निकाया, और संरक्षक करे। इसीमें
में सर्वमदेव के नामनक ठाकुर िहै — भागवत् भाषणका प्र. २७२।

बद्धमन अथवेकि उढ़ी सिद्धीने पवनक चलते थे जो पूर्वबर्ती
उन २३ अनेकों अथवा तीर्थगृहोंकी परम्परा द्वारा जिनका इतिहास
भविष्यक अवशेषानीके रुपमें मिलता है प्रकारमें लाभ थे। वे किसी
नेवे सक्ते संस्थानक नहीं थे। इसी पूर्वकी पहली प्राधिकारियोंके प्रथम
तीर्थों कुछां तीर्थवाहको व्यक्ति करते थे। इनके पश्चात
प्रमाण हैं: सन्यासी वर्गमें मतदाताएंके पुण्य पाणी में जूझू है। भागवतमण
से इंग्रजी चार संधि करता है। अंग्रेजों द्वारा पहले के अभावित
सुगमि चला आया है।

In Indian Philosophy P. 227.

B. Dr. Sir Radha Kishun, Voice Chansler Hindu Univer, City BENARES.

वस्ति नमाजनी विशिष्ट नेमि: वस्तिनी वहस्ततिसंयुत ||
यथा ४० २५ संय १९ ||

नेमिरा श्रवणाता विद्वान प्रण वुष्टि वर्मानों अभ्य स्वाह ||
यथा ४० १ संय २५ ||
[ ९ ]

श्रापं मा समानानि स्वाभावानि विषा तविम।
इति श्रापं कृपि, विषाणु गोपितं ग्रब्धम॥
कदेव भूम ८ संत्र ८ दिने २४।

जैनधेरे बिज्ञानके आधार पर है, बिज्ञानक उपरोक्त बिज्ञानक बिज्ञानको जैन दर्शनके समीप लाता जागा है।

—हौ १०० एक है। टूटी टूटी हटती।

महावीरं जैन धर्मके संस्कारक नहीं थे, किन्तु उन्होंने उसका पुनर्वड़ फैला। वे संस्कारके बजाय सुधारक थे।

—इंग्लैंड, इंग्लैंड।

में आज्ञा करता हूँ कि बनमान संप्रदाय समाज समाज महादेवके आदर्शों पर बल कर आपमें संदेह और भ्रमनालका मुथ श्वासित करेगा।

—हौ १०० सात चौँ हूँ।

साहित्यक दूर तो हो वह से लेकिन माया है, जिस मायामें मौ महादेवने आसीन दिया था।

—हौ १०० खाल्दास नाग।

मौ महादेव हुण ध्वारि सत्य और आदिवासके पालकसे ही संसार, संसार और त्रिभुजों अपनी सुधा का सफल्क है।

—हौ १०० इमामपाठूर सुकृती, आधुनिक हिन्दु महासभा।

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है, जैन दर्शन मनुष्य दर्शन नहीं है। जिन देवता हैं वह, किन्तु मनुष्य थे।

—यौ १०० हरिसत्य महादेव।
जैनमत सबसे प्रचलित हुआ, जबसे संसार में सुशिक्षा आरम्भ हुआ। युगे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है कि जैन धर्म वेदान्त के दर्शनों में पुर्वक है।

—डा० अमीर नदर गिनिमल संस्कृत कोल्हा, कलकत्ता।

जातीय के भाषा आधारस्म पूरे भाग में जिस दृष्टि संविधान भाषा हो रहा था, वह वास्तव में जैन संविधा ही थी। जैन समाज में जीवन ध्वनि संघ नामके एक अन्य धार्मिक आधार मिलती है।

—सर पनुलल चंद्र।

यद्यपि बैठने में पद्धतिकी धर्मी प्रातिक सामाजिक वातावरण बनाया है, तथापि उस धर्मके जैन समूहोंके प्रभाव में सब से मुख्य हो रहा है। महाकाव्य तीर्थकर्मोंके अर्थत्ता तत्त्वज्ञानका संसार में विस्तार हुआ।

—डा० हाईकेट असिन्टा से नियम।

युगे जैन तीर्थकर्मोंके शिक्षा पर अभिव्यक्ति मध्यक है।

—मैनाल बनसागर अधि० शास्त्री।

अब तक में जैन धर्मको जिन्ता जान सका हूं में इतने विकास हो गया है कि विरोधी रुझान यदि जैन साहित्यों का भवन करे तो विरोध करना छोड़ दें। —डा० गंगानाथ जो. एम. प. डी. जिंद्र।

बैद्ध साहित्यमें अनौयोगी नैन अद्वित नाम प्रसिद्ध हैं, जैनमें अनौयोगी नित्यन्त्र कहे जाते हैं।

—डा० विमलचरण का।
[11]

जैन हिन्दुओंकी सन्तान नहीं है।

—सर कुमारस्वामी चौप जस्तिस बॉव मद्रास हाईकोर्ट
जैनरिंग में प्राचीनतम स्वीकार करता है।

—कोल्हुक।

समट अशोकने काशीर तक जैन धर्म का प्रचार किया था।

—अनुवत्ती प्रवाह (अव-वर्का दरबारी रच)।

बन्दूक, मलं: जैन था वर श्रांगन (जैन मुहर्द) से उपदेश
सुनता था।

—मगधनीज श्रोफ इतिहासकार।

जैन धर्मके पुंजाब थे।

—अमृत गल।

हिमाचलमें लेता काशीकुलारी तक सिक्कुकुता उससे भी आपेक्षिक
श्रीकृष्ण तक, व ज्ञानोंसे बहुत तक। अगर उससे भी आपेक्षिक इग्नाम,
बबरदेश, जाता। आदि देशमें जैनरिंग लोग पैदें हुई थे।

—गोविंददास गाँवेंगुप्त अपनी, 10 प. प. हैदराबाद।

जैनरिंग हिन्दू धर्मके समेत श्वेतक है।

—पी. पोदलमुखर।

जैनरिंग प्राचीन कालसे है।

—गापद्वारा संकाराचार्य।

जैनरिंग इस देशमें ज्ञान हर्मके जन्म था उनके हिन्दू धर्मवाले
कठोरीने बहुत परिलेखने प्रचलित था।

—रामनेश जस्टिस ऑफ बीच हाई कोर्ट।
[१२]

महावीरके सिद्धान्तमें बताये गये स्वाभाविको कितने ही लोग संन्यासवाद कहते हैं, इसे में नहीं मानता। स्वाभाव संन्यासवाद नहीं है, किन्तु यह एक ही ही किसी अन्य उपमाग का देता है। विश्वास किसी रीति से भविष्यवाण करना बड़िये यह हमें सिलसिला है। यह निदान है कि बिन्दु जिन्हें विश्वास द्वारा निरीक्षण किये बिना कोई भी वह सभ्यता स्वरूप में घा नहीं लाती! स्वाभाव (जैनधर्म) पर बालकों करना यह अनुचित है।

— प्रो. अनंदराम्य नाकूडार गुप्त,

मुनिपुर्ष प्रो. वाहिम चौंदक हिन्दू विश्व विचारवाद कारी।

मैं अपने देशवासियों को (द्वारा) कि कैसे वैभ नियम और उन्हें विचार ज्ञानम और ज्ञान आनन्दम है ज्ञान साहित्य विश्व साहित्यसे काफी बड़ा बड़ा है। उन्होंने यह विचार तथा उनके साहित्यको समझता हूँ वह वे है जो में अभिकृतिक प्रभाव करता है।

—हो. जन्म हर्दन, कर्मी।

मनुष्योंकी उन्नतिके लिये जैनधर्मका चारित्र बहुत ही खाम-कारी है। यह अन्य बहुत ही ठोक, व्यवस्था, सादा, तथा मुद्यम है। न.कोकोंके प्रचलित नरसोंसे वह पक्कम ही भिज है। तात्त्व ही साध बौद्ध धर्मकी तत्त्व नास्तिक भी नहीं है।

—हो. प्य. गिर नोट, प्राणस।

महावीरने दिमिम स्वरूप मानने पर एक सर्दी है फैलाया कि
[१३]

भर्म यह केवल सामाजिक रूप नहीं है, किंतु गार्हस्थ्यक स्तर है।
मोह यह बाह्यि क्रियाकांड पालने पर पात नहीं होता। भर्म तथा
मनुष्यमे कोई स्थायी भोग नहीं रह सकता।

—स०२ कवि समारू बबीद्वनाथ टिपोर।

जिन्होंने मोह मायको और मनको जीत किया है ऐसे इनका
शिनाथ "जिन" है, और ये तीर्थकर हैं, इनमे बनावट नहीं थी,
दिलावट नहीं थी। जो वत थी साफ़ थी। ये दुःनियोके जबरे स्तू
सिमेरे जबरे उपकारी और से ऊँचे दुःरके उपदेश हो गुजरे हैं।
यह इसानी कमजोरीमे ग़लत नहीं था। इसे उदार था, इनमे धर्मका
कमजोर था।

—श्रीमुनि दिश्मनवनकारी चमान, अनेको ग्यारोके (साहित्, तत्त्वज्ञानी,
मालिक, सत्तमज्ञान आदि पत्र) अभिलक्ष, लता अनेको समुदादे (विवाह
कल हुपु, रख्यात धरे आदि ग्रंथ: विन्दुपाल, अनेक अभिके (दिप्य-
पुराण आदि) अभिलक्ष।

प्राचीन काममे दिलावट दृष्ट हो उदार नरेन "अर्थसं भगवतमः।"
यह दिशा देते थे। इनकी शिखने द्वारा समुद्र बाँध तत्त्व भाषाको
अनेक उपकार किये थे।

—स०० राजेदुलाल मिश्र।

चौथ मनुष्यमे पस्ति गतु स्वयंरुपे अभिद्वार नातिना पुत्र
कृष्णदेव हुआ, जो दिग्विजय जैन समुद्राकारा आदि प्रताप किया। इनके
जनमकालमे जगतकी बाल्यवस्था थी।

—भागवत स्कम ५, अ० र सूत ६।
[१४]

जैन कृत्तिमके चारित्रसे जनता मंत्र सुग भी।
—महाभाष्ट, मौर्यज्ञ महायान।

प्राचीनमके भारतवर्षमें इतिहासमें जैनियोंने अपना नाम जगतमें धारा रखा है।
—कर्नल टॉड साहेब।

जैनधर्म, बौद्धधर्मसे भास्त्र प्राचीन है।
—सिमट्रा प्रहर्ष तामस।

जैनधर्म प्राचीन है, और उसका विकास अहंकारमें है।
—राजगोपालचार्य, गवर्नर बंगाल प्रांत।
भगवान वीर और उनका संदेश।

पं० "स्वतंत्र" जी के नवीन ही पद्धतियों के लिए है, इसमें भी महावीर के संक्षिप्त जीवन चरित्र देते हुए उनके परिवार के संदेश सृजना अहिंसा, सत्य, अपराध बिना कृपा, स्थायी, साम्राज्य, आदि विषयों पर बहुत ही खुदरा दंगासंग कर भाषामें प्रतिपादन किया गया है।

महावीर के घटना, पर्याय, रक्षारक्षण, दैविक आदि, स्मृति पत्रों, एवं विद्वान आदि, अथवा अन्य समारोहक उपलब्धि की लघु दर्शन ऊपर के संगात्र संगठन और जनतामें जनरियमका नामक दंगासंग प्रचार कराए।

अन्तः समस्त कोष शृंगदासजी कृपा मूल ०८ आधिकारिक संवरण, पं० स्वतंत्रजी कृपा शब्दवादिय एवं भावान्त सहित तैयार है। मूल्य वारह अनेक।

विद्वान ने फाना—
मेनेन दिग्विजय मेन प्रभातकालय सुरत।